

ओ३म्

चार फल

प्रथम भाग

सम्पादक तथा लेखक

गणपति आर्योपदेशक

देहली ।

१९८१ वि०

१९२५ ई०

दयानन्दाब्द ४१

प्रथमावृत्ति २०००] [मूल्य

बेताब प्रिंटिंग वर्क्स देहली ।

ओ३म्

सच्चिदानन्देश्वराय नमो नमः

चार फल

प्रथम भाग

भूमिका

महर्षि दयानन्द ने मनुष्यजाति पर जो अनेक उपकार किये हैं उन में से एक महान् उपकार यह है कि उन्हों ने मनुष्यजाति के सन्मुख मनुष्यजीवन का वास्तविक उद्देश्य रक्खा है। वेदादि सत्यशास्त्र, सब ऋषि मुनि इस विषय में सहमत हैं कि मनुष्यजीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पदार्थों की प्राप्ति करना ही है। ये ही "चार फल" हैं जो मनुष्य-शरीररूपी वृक्ष में लगने से यह शरीर सफल होता है अन्यथा निष्फल चला जाता है। इस लिये सब मनुष्यों को इन चार पदार्थों की प्राप्ति

के लिये सदा प्रयत्नशील होना चाहिये । यदि मनुष्य इन पदार्थों की प्राप्ति के लिये उद्योग न करेगा तो उसे अधर्म, अनर्थ, द्वेष तथा बन्ध ये चार पदार्थ अवश्य ही प्राप्त होकर दुःखदायी होंगे। इस लिये इन चार पदार्थों का परित्याग कर के धर्मादि पदार्थों का ग्रहण करना अत्यन्त आवश्यक है। इस पुस्तक के प्रकाशित करने का उद्देश्य भी यही है कि सब मनुष्यों को अपने जीवन के उद्देश्य का ज्ञान हो जावे जिस से सब उस की प्राप्ति के लिये उद्योग कर सकें। इस पुस्तक के पृथम पूकरण में महर्षि दयानन्द पूणीत सत्यार्थपूकाश तथा अन्य ग्रन्थों से चतुर्वर्ग-बोधक कुछ पूकरणों का संग्रह सर्वसाधारण आर्य जनता के लिये किया गया है। दूसरे पूकरण में महर्षि कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा वेद-भाष्य के कुछ पूकरणों का संग्रह है। वेदभाष्य का भावार्थ आर्य भाषा में दिया गया है। तीसरे प्रकरण में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लक्षणादि तथा अन्य आर्षग्रन्थों तथा वैदिक विद्वानों के कुछ लेख हैं।

यद्यपि इस पुस्तक का दूसरा भाग मुख्यतया आर्य विद्वानों तथा पंडितों के लाभार्थ तथा विचारार्थ प्रकाशित किया गया है तथापि दोनों भागों से सर्वसाधारण आर्य जनता तथा विद्वज्जन लाभ उठा सकते हैं।

इस पुस्तक के सम्पादन तथा लेखन में जो त्रुटियां तथा भूलें हो गई हों उन की सूचना स्वाध्यायशील आर्य जनता तथा आर्य पंडित देने का अनुग्रह करें। क्योंकि यह मेरा प्रथम प्रयत्न है।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

अन्त में मैं उस महर्षि को पुनः पुनः धन्यवाद देता हुआ सच्चिदानन्दस्वरूप परम पिता परमात्मा से अत्यन्त विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूं कि हे करुणानिधे परमात्मन्! सब मनुष्यों के आत्माओं में सत्य का ऐसा प्रकाश कीजिये जिस से वे अपने मनुष्यजन्म के इन चार फलों के स्वरूप को यथावत् जानकर प्राप्त करने को समर्थ हो सकें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत्॥

सब का शुभचिन्तक
गणपति आर्योपदेशक देहली

निवेदन

इस पुस्तक के दूसरे भाग को भी ऋषि-जन्म-शताब्दि महोत्सव पर ही प्रकाशित करने का विचार था किन्तु कई कारणों से ऐसा न कर सका। उस को भी किसी अनुकूल समय में यथासम्भव शीघ्र प्रकाशित करने का प्रयत्न करूंगा।

निवेदक

गणपति आर्योपदेशक

देहली

सच्चिदानन्देश्वराय नमो नमः

चार फल

प्रथम भाग

प्रथम प्रकरण

सत्यार्थप्रकाश में

चार फल

१ जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप नहीं करते वे सब प्रकार के रोगों से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं ॥ पृष्ठ ४२

२ विद्वानों का यही काम है कि सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग करके परम आनंदित होते हैं । वे ही गुणग्राहक पुरुष विद्वान् होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-रूप फलों को प्राप्त होकर प्रसन्न रहते हैं ॥ पृ० २८६

३ उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिः।सांख्य ३-७९
इतरथान्धपरम्परा ॥ सांख्य ३-८१
अर्थात् जब उत्तम २ उपदेशक होते हैं तब अच्छे प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते तब अन्धपरम्परा चलती है। फिर भी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं, तभी अन्धपरम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है। पृ० २९६

४ मूर्तिपूजा करते २ ज्ञानी तो कोई न हुआ प्रत्युत सब मूर्तिपूजक अज्ञानी रहकर मनुष्यजन्म व्यर्थ खोके बहुत २ से मर गये और जो अब हैं वा होंगे वे भी मनुष्यजन्म के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्तिरूप फलों से विमुख होकर निरर्थ नष्ट हो जायँगे॥ पृष्ठ ३३०

५ भला अब लों जो हुआ सो हुआ परन्तु अब तो अपनी मिथ्या प्रपंचादि बुराइयों को छोड़ो और सुन्दर ईश्वरोक्त वेदविहित सुपथ में आकर अपने मनुष्यरूपी जन्म को सफल कर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इस चतुष्टय फल को प्राप्त होकर आनन्द भोगो॥ पृ० ३८८

६ जिस २ साधन से वह श्रोता धर्मार्थ काम मोक्ष और परमात्मा को जान सके वैसी शिक्षा किया करे ॥ पृ० ४०५

७ जो पुरुष विद्वान्, ज्ञानी, धार्मिक, सत्पुरुषों का संगी, योगी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय, सुशील होता है वही धर्मार्थ काम मोक्ष को प्राप्त होकर इस जन्म और परजन्म में सदा आनन्द में रहता है ॥ पृ० ४१३

८ अग्निहोत्रादि यज्ञों से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि द्वारा आरोग्यता का होना उससे धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि होती है उसको न जानकर वेद ईश्वर और वेदोक्त धर्म की निन्दा करना धूर्तों का काम है ॥ पृष्ठ ४२३

९ सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से "यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे" जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ काम मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें, यही मेरा मुख्य प्रयोजन है ॥ पृ० ६३०

संस्कारविधि में

" चार फल "

१ जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं इसलिये संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है ॥ पृ० २

२ सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर आप मुझ और सब पढ़ने पढ़ानेहारे तथा सब संसार पर अपनी कृपा दृष्टि से सब को सभ्य, विद्वान्, शरीर और आत्मा के बल से युक्त और परोपकारादि शुभ कर्मों की सिद्धि करने कराने में चिरायु स्वस्थ पुरुषार्थी उत्साही करे कि जिस से इस परमात्मा की सृष्टि में उसके गुण कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण कर्म स्वभावों को करके धर्मार्थ काम और मोक्ष की सिद्धि कर करा के सदा आनन्द में रहें ॥ पृ० ११७

३ हे परमेश्वर दयानिधे ! आप की कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें ॥ पृ० १९६

४ जिस परमात्मा का यह "ओम्" नाम है उसकी कृपा और अपने धर्मयुक्त पुरुषार्थ से हमारे शरीर, मन और आत्मा का त्रिविध दुःख जो कि अपने दूसरे से होता है नष्ट होजावे और हम लोग प्रीति से एक दूसरे के साथ वर्त्त के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि में सफल हो के सदैव स्वयं आनन्द में रहकर सब को आनन्द में रक्खें ॥ पृ० २२८

आर्याभिविनय में

चार फल "

१ हे परमैश्वर्यवन् भगवन् ! धर्मार्थकाम मोक्षादि तथा विज्ञानादि दान से अत्यन्त मुझ को बढ़ा ॥ पृ० ७२ स्थूलाक्षर, पृ० १८३ सूक्ष्माक्षर

२ सब पुरुषार्थ यही है कि परमात्मा, उस की आज्ञा और उस के रचे जगत् का यथार्थ से निश्चय [ज्ञान] करना, उसी से धर्म, अर्थ, काम

और मोक्ष इन चार प्रकार के पुरुषार्थ के फलों की सिद्धि होती है अन्यथा नहीं! इस हेतु से तन, मन, धन और आत्मा इन से प्रयत्नपूर्वक ईश्वर के साहाय्य से सब मनुष्यों को धर्मादि पदार्थों की यथावत् सिद्धि अवश्य करनी चाहिये॥ पृ० १२१-१२२ स्थूलाक्षर, पृ० ३०२ सूक्ष्माक्षर

पञ्चमहायज्ञविधि में

"चार फल"

१ इन नित्यकर्मों के फल ये हैं कि ज्ञान-प्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होना उस से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये सिद्ध होते हैं। इनको प्राप्त होकर मनुष्यों को सुखी होना उचित है॥ पृ० १

२ ईश्वर सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, चेतन, व्यापक, अन्तर्यामी, सब का उत्पादक, धारण करनेहारा, मङ्गलमय, शुद्ध, सनातन, ज्ञान और आनन्दस्वरूप है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष

पदार्थों का देनेवाला, सब का पिता, माता, बन्धु, मित्र, राजा और न्यायाधीश है इत्यादि ईश्वर के गुण विचारपूर्वक उपासना करने का नाम सगुणोपासना है ॥ पृ० १६

३ सब लोगों को चाहिये कि सत् चित् आनन्दस्वरूप, नित्यज्ञानी, नित्यमुक्त, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, व्यापक, कृपालु, सब जगत् के जनक और धारण करनेहारे परमेश्वर ही की सदा उपासना करें कि जिस से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जो मनुष्यदेहरूप वृक्ष के चार फल हैं वे उस की भक्ति और कृपा से सर्वथा सब मनुष्यों को प्राप्त हों ॥ पृ० ३८

४ हे ईश्वर दयानिधे ! आप की कृपा से जो २ उत्तम काम हम लोग करते हैं वे सब आप के अर्पण हैं जिस से हम लोग आप को प्राप्त होके धर्म जो सत्य न्याय का आचरण करना है, अर्थ जो धर्म से पदार्थों की प्राप्ति करना है, काम जो धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन करना है और मोक्ष जो सब दुःखों से छूट कर सदा आनन्द में रहना है। इन चार

पदार्थों की सिद्धि हमको शीघ्र प्राप्त हो ॥ पृ० ४०

व्यवहारभानु में

"चार फल"

१ क्या मनुष्य अच्छी शिक्षा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष फलों को सिद्ध नहीं कर सकता ? पृ० १

२ किसी का सामर्थ्य नहीं है कि जो अविद्वान् होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के स्वरूप को यथावत् जान कर सिद्ध कर सके ॥ पृ० ११

३ इस के होने से जहां रहोगे वहां सुखी और प्रतिष्ठा पाओगे, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सम्बन्धी कर्मों को जान कर सिद्ध कर सकोगे ॥ पृ० १७

४ सब मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि सर्वथा झूठ छोड़ कर सत्य ही से सब व्यवहार करें, जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहें ॥ पृ० ३०

५ [प्रश्न] राजा किसको कहते हैं ?

[उत्तर] जो विद्या, न्याय, जितेन्द्रियता,

शौर्य, धैर्य आदि गुणों से युक्त होकर अपने पुत्र के समान प्रजा के पालन में श्रेष्ठों की यथायोग्य रक्षा और दुष्टों को दण्ड देकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति से युक्त होकर, अपनी प्रजा को कराकर आनन्दित रहता और सब को सुख से युक्त करता है वह राजा कहाता है ॥ पृ० ३४

गोकरुणानिधि में

"चार फल"

प्रमत्त–कहो जी मांस तो छूटा सो छूटा परन्तु मद्य पीने में तो कोई भी दोष नहीं ?

शान्त–मद्य पीने में भी वैसे ही दोष हैं जैसे कि मांस खाने में, मनुष्य मद्य पीने से नशे के कारण नष्टबुद्धि होकर अकर्त्तव्य कर लेता और कर्त्तव्य को छोड़ देता है, न्याय का अन्याय और अन्याय का न्याय आदि विपरीत कर्म करता है और मद्य की उत्पत्ति विकृत पदार्थों से होती है और वह मांसाहारी अवश्य हो जाता है इस लिये इस के पीने से आत्मा में विकार उत्पन्न होते

हैं और जो मद्य पीता है वह विद्यादि शुभ गुणों से रहित होकर उन दोषों में फंस कर अपने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष फलों को छोड़ पशुवत् आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि कर्मों में प्रवृत्त होकर अपने मनुष्यजन्म को व्यर्थ कर देता है इसलिये नशा अर्थात् मदकारक द्रव्यों का सेवन कभी न करना चाहिये। जैसा मद्य है वैसे भांग आदि पदार्थ भी मादक हैं इसलिये इन का भी सेवन कभी न करे, क्योंकि ये भी बुद्धि का नाश करके प्रमाद, आलस्य और हिंसा आदि में मनुष्य को लगा देते हैं इसीलिये मद्यपान के समान इन का भी सर्वथा निषेध ही है ॥ पृ० ११-१२

सत्यधर्मविचार में

"चार फल"

१ [ईश्वर ने] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये जीवों के नेत्रादि साधन भी रचे हैं ॥ पृ० १२

२ पक्षपात से ही नित्य अधर्म होता है। अधर्म से काम को सिद्ध करना इसी को अनर्थ कहते हैं और धर्म और अर्थ से कामना अर्थात् अपने सुख की सिद्धि करना इसको काम कहते हैं, और अधर्म अर्थात् अनर्थ से काम को सिद्ध करना इसको कुकाम कहते हैं इसलिये इन तीनों अर्थात् धर्म, अर्थ और काम से मोक्ष को सिद्ध करना उचित है। इस में यह बात है कि ईश्वर की आज्ञा का पालन करना इसको धर्म और उसकी आज्ञा का तोड़ना इसको अधर्म कहते हैं सो धर्मादि ही मुक्ति के साधन हैं और कोई नहीं और मुक्ति सत्य पुरुषार्थ से सिद्ध होती है अन्यथा नहीं ॥ पृ० १८-१९

महर्षि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन प्रथम भाग में

"चार फल"

१ परमात्मा से सदा यही प्रार्थना करता हूं

कि आप महाशय पुरुषों की बुद्धि को परोपकार के करने में निरन्तर नियुक्त किया करें, जिस से पुनः यह आर्यावर्त्त देश अपनी पूर्व दशा को सम्प्राप्त होकर अपने मनुष्यरूपी वृक्ष में धर्म अर्थ, काम और मोक्षरूपी चतुष्टय फलों से संयुक्त होकर परमानन्द भोगे ॥ पृ० १४

२ निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु ।
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा ।
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

इस का अभिप्राय यह है कि संसार में चाहे कोई निन्दा करे वा स्तुति, लक्ष्मी अर्थात् धनादि पदार्थों की प्राप्ति हो चाहे अप्राप्ति, और मरण चाहे इसी समय हो वा कालान्तर में परन्तु धीर पुरुष ऐसी २ विपत पर भी धर्मरूपी मार्ग नहीं छोड़ते इस का फल यह है कि जो पुरुष ऐसा दृढ़-निश्चययुक्त धर्मपथ में स्थिर रहता है उसके लिये धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों की प्राप्ति होती है ।पृ० १७

द्वितीय भाग में

चार फल

३ जब वेदों का सत्य अर्थ सब को विदित होगा तब मनुष्य लोग असत्य व्यवहार को छोड़ के सत्य का ग्रहण और सत्य में ही प्रवृत्त होंगे इस के होने से मनुष्यों को सुख की प्राप्ति अवश्य होगी तथा वेद का सत्य अर्थरूप जो राज्य और परमेश्वर का यथावत् प्रकाशरूप जो अखण्ड राज्य है सोभी इस भाष्य के होने से जगत् में यथावत् प्रकाशित होगा इस निमित्त से भी यह वेदभाष्य परमोत्तम होता है और जब इस वेदभाष्य को यथावत् विचार के उसके कहे प्रमाण से जो मनुष्य आचरण करेंगे उनको सत्य धर्म सत्य अर्थ सत्य काम और नित्य सुखरूप जो मोक्ष इन चारों पदार्थों की सिद्धि यथावत् प्राप्त होगी इस में कुछ सन्देह नहीं ॥

यह प्रथम प्रकरण समाप्त हुआ

द्वितीय प्रकरण

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में

चार फल

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों की प्राप्ति के लिये इन चार आश्रमों का सेवन करना सब मनुष्यों को उचित है ॥ पृ० २५०

ऋग्वेदभाष्य में

चार फल

१ हे मनुष्यो ! अनन्त सत्यविद्यायुक्त अनादि सर्वज्ञ परमेश्वर ने तुम लोगों के हित के लिये जिन अपने विद्यामय अनादिरूप वेदों को प्रकाशित किये हैं उन को पढ़ पढ़ा और धर्मात्मा विद्वान् होकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष फलों को सिद्ध करो ॥ १।७२।१

२ जो मनुष्य अच्छी शिक्षा से युक्त अच्छे प्रकार परीक्षित शुभ लक्षणयुक्त संपूर्ण विद्याओं का वेत्ता दृढाङ्ग अतिबली पढ़ानेहारा श्रेष्ठ सहाय से सहित पुरुषार्थी धार्मिक विद्वान् है वही धर्म

अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त होके प्रजा के दुःख का निवारण कर पराविद्या को सुन के प्राप्त होता है इस से विरुद्ध मनुष्य नहीं ॥ ११८६।५

३ मनुष्यों को चाहिये कि विद्या और पुरुषार्थ से विद्वानों के संग ओषधियों के सेवन और पथ्य से जो २ प्रशंसित कर्म प्रशंशित गुण और श्रेष्ठ पदार्थ प्राप्त होते हैं उन का धारण और उन की रक्षा तथा धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि कर मोक्ष की सिद्धि करें ॥ ॥११९११८॥

४ हे मनुष्यो तुम जिस परम गुरु परमेश्वर ने वेद के द्वारा सर्व पदार्थों का विशेष ज्ञान कराया है उस का आश्रय करके यथायोग्य व्यवहारों का अनुष्ठान कर धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये बहुत काल पर्यन्त जीवन की रक्षा करो ॥
११९६।८

५ जो देखने योग्य परिमाण वाला पदार्थ है वह परमात्मा होने को योग्य नहीं। न कोई भी उस अव्यक्त सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर के विना समस्त जगत् को उत्पन्न कर सकता है और न

सर्वव्यापक सच्चिदानन्दस्वरूप अनन्त अन्त-

यानी चराचर जगत् के आत्मा परमेश्वर के विना संसार के धारण करने जीवों के पाप और पुण्यों का साक्षीपन और उनके अनुसार जीवों को सुख दुःखरूप फल देन को योग्य है न इस परमेश्वर की उपासना के विना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के पाने को कोई जीव समर्थ होता है इस से यही परमेश्वर उपासना करने योग्य इष्टदेव सब को मानना चाहिये ॥ १।११५।१

६ मनुष्यों को चाहिये कि पाप से दूर रह धर्म का आचरण और जगदीश्वर की उपासना कर शान्ति के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की परिपूर्ण सिद्धि करें ॥ १।११५।६

७ मनुष्यों को सदैव स्थूल छिद्ररहित वस्त्र पहिन कर जानने योग्य दोषरहित वस्त्रादि पदार्थ निर्माण करने चाहियें और सदैव धारण किये हुए सत्याचरण से असत्याचरणों को छोड़ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अच्छे प्रकार सिद्ध करने चाहियें॥

१।१५२।१

८ विज्ञान चाहनेवाले जनों को शिष्ट महात्मा जनों से पाई हुई बुद्धि को प्राप्त होकर बहुत प्रकार

के पदार्थविज्ञान से मनुष्यजन्म के धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूपी फलों को प्राप्त होना चाहिये ॥ २।२।९

९ जो अग्नि के सदृश तेजस्वी विज्ञानदाता विद्वान् लोग धर्म अर्थ काम और मोक्ष के साधनों का उपदेश दें उनकी नित्य नमस्कारपूर्वक सेवा करनी चाहिये ॥ ३।१७।४

१० मनुष्यों को चाहिये कि निष्फल क्रियाओं को कभी न करें। जिस २ क्रिया से धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि हो उस २ को प्रयत्न से करें। ॥ ३।४१।३

११ जो मनुष्य सब के साक्षी पिता के सदृश वर्तमान न्यायेश कृपालु शुद्ध सनातन सब के आत्माओं के साक्षी परमात्मा की ही स्तुति और प्रार्थना करके उपासना करते हैं उनको कृपा का समुद्र सब से श्रेष्ठ परमेश्वर, दुष्ट आचरण से पृथक् करके श्रेष्ठ आचरण में प्रवृत्त करा पवित्र तथा पुरुषार्थयुक्त करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कराता है ॥ ३।६२।१०

१२ हे मनुष्यो परमेश्वर आप लोगों के प्रति

चार प्रकार के पुरुषार्थ को सिद्धि कारो ऐसा कहता है कि जो परस्पर मित्र होकर कार्य की सिद्धि के लिये प्रयत्न करो तो धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि आप लोगों को विना संशय प्राप्त होवे ॥

४।३५।३

१३ मनुष्य लोग यथार्थवक्ता विद्वानों के संग से धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि करने वाले यज्ञ का विस्तार करें ॥ ५।१३।३

१४ इस संसार में जो मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्गों को जानें वे ही अन्यों को भी उपदेश देवें न कि इतर अज्ञ जन ॥ ६।१६।३

१५ जैसे अग्नि यथावत् सम्प्रयोग किया हुआ सब कार्यों को सिद्ध करता है वैसे ही सत्कार कर स्वीकार किये वेद के विद्वान् लोग धर्मार्थ काम मोक्ष पदार्थों को सब को प्राप्त कराते हैं ॥

७।७।५

यजुर्वेदभाष्य में

"चार फल"

१ स्त्री और पुरुष विवाह से पहिले परस्पर एक दूसरे की परीक्षा करके अपने समान गुण कर्म स्वभाव रूप बल आरोग्य पुरुषार्थ और विद्यायुक्त होकर स्वयम्वर विधि से विवाह करके ऐसा यत्न करें कि जिस से धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि को प्राप्त हों जिस के माता और पिता विद्वान् न हों उनके सन्तान भी उत्तम नहीं हो सकते इस से अच्छी शिक्षा और पूर्ण विद्या को ग्रहण करके ही गृहाश्रम का आरम्भ करें इस के पूर्व नहीं ॥ ८।९

२ जैसे इस संसार में सूर्य की किरण सब जगह फैल के प्रकाश करती हैं वैसे राजा प्रजा और सभासद् जन शुभ गुण कर्म और स्वभावों में प्रकाशमान हों क्योंकि ऐसा है कि मनुष्यशरीर पाकर किसी उत्साह पुरुषार्थ सत्पुरुषों का संग और योगाभ्यास का आचरण करते हुए मनुष्य को धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि तथा शरीर आत्मा और समाज की उन्नति करना दुर्लभ नहीं

है इस से सब मनुष्यों को चाहिये कि आलस्य को छोड़ के नित्य प्रयत्न किया करें ॥ ८।४०

३ जैसे सूर्य की किरणों को प्राप्त होकर संसार के पदार्थ शुद्ध होते हैं वैसे ही दुराचारी पुरुष अच्छी शिक्षा और दण्ड को पाकर पवित्र होते हैं गृहस्थों को चाहिये कि अनन्त दुःख देने और कुल को भ्रष्ट करने वाले व्यभिचार कर्म से सदा दूर रहें क्योंकि इस से शरीर और आत्मा के बल का नाश होने से धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि नहीं होती ॥ ८।४८

४ मनुष्यों को चाहिये कि सब से पहिले ओषधियों का सेवन, पथ्य का आचरण और नियमपूर्वक व्यवहार करके शरीर को रोगरहित करें। क्योंकि इसके विना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान करने को कोई भी समर्थ नहीं हो सकता ॥ १२।७६

५ मनुष्यों को ऐसा विचारना चाहिये कि हमारे शरीर अनित्य और स्थिति चलायमान है इस से शरीर को रोगों से बचा कर धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का अनुष्ठान शीघ्र करके अनित्य

साधनों से नित्य मोक्ष के सुख को प्राप्त होवें। जैसे ओषधि और तृण आदि फल फूल पत्ते स्कन्ध और शाखा आदि से शोभित होते हैं वैसे ही रोगरहित शरीरों से शोभायमान हों ॥ १२।७९

६ जो राजा प्रजा के सम्बन्धी मनुष्य बुद्धि, बल, आरोग्य और आयु बढ़ानेहारे ओषधियों के रसों का सदा सेवन करते और प्रमादकारी पदार्थों का सेवन नहीं करते वे इस जन्म और पर जन्म में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने वाले होते हैं ॥ १९।७

७ हे मनुष्यो ! जो एक ही सब जगत् का महाराजाधिराज समस्त जगत् का उत्पन्न करनेहारा सकल ऐश्वर्ययुक्त महात्मा न्यायाधीश है उसी की उपासना से तुम सब धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के फलों को पाकर सन्तुष्ट होओ ॥ २३।३

८ हम लोग इस बात को यथार्थ प्रकार से नहीं जानते कि वह ईश्वर किस युक्ति से हम को प्रेरणा करता है कि जिस के सहाय से ही हम लोग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सिद्ध करने को समर्थ हो सकते हैं ॥ ३६।४

९ हे मनुष्यो ! जो अनन्त शक्तियुक्त अजन्मा निरन्तर सदामुक्त न्यायकारी निर्मल सर्वज्ञ सबका साक्षी नियन्ता अनादिस्वरूप ब्रह्म कल्प के आरम्भ में जीवों को अपने कहे वेदों से शब्द अर्थ और उनके सम्बन्ध को जनाने वाली विद्या का उपदेश न करे तो कोई विद्वान् न होवे और न धर्म अर्थ काम और मोक्ष के फलों के भोगने को समर्थ हो इसलिये इसी ब्रह्म की सदैव उपासना करो ॥

४०।८

१० जो सत्यभाव से परमेश्वर की उपासना करते यथाशक्ति उसकी आज्ञा का पालन करते और सर्वोपरि सत्कार के योग्य परमात्मा को मानते हैं उनको दयालु ईश्वर पापाचरणमार्ग से पृथक् कर धर्मयुक्त मार्ग में चला के विज्ञान देकर धर्म अर्थ काम और मोक्ष को सिद्ध करने के लिये समर्थ करता है इस से एक अद्वितीय ईश्वर को छोड़ किसी की उपासना कदापि न करें ॥ ४०।१६

यह द्वितीय प्रकरण समाप्त हुआ

तृतीय प्रकरण

धर्म और अधर्म का लक्षण

१ जो पक्षपातरहित न्याय सत्य का ग्रहण असत्य का सर्वथा परित्यागरूप आचरण है उसी का नाम धर्म और इस से विपरीत जो पक्षपात-सहित अन्यायाचरण सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहणरूप कर्म है उसी को अधर्म कहते हैं ॥

सत्यार्थप्रकाश पृ० ५१

२ जो पक्षपातरहित न्यायाचरण सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उस को "धर्म" और जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञाभंग वेदविरुद्ध है उस को "अधर्म" मानता हूं ॥ सत्य० प्र० पृ० ६२५

३ जिस का स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये यही एक मानना योग्य है उस को धर्म कहते हैं॥ आर्योद्दे०

४ जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा को छोड़ कर और पक्षपातसहित अन्यायी होके विना परीक्षा करके अपना ही हित करना है जो अविद्या हठ अभिमान क्रूरतादि दोषयुक्त होने के कारण वेदविद्या से विरुद्ध है और सब मनुष्यों को छोड़ने के योग्य है वह अधर्म कहाता है ॥

आर्योद्देश्यरत्नमाला

मनुष्यमात्र के लिये
धर्म और अधर्म का एकत्व

१ धर्म जो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमियों का अर्थात् सब मनुष्यमात्र का एक ही है ॥ सत्य० प्र० पृ० १२१

२ धर्म और अधर्म एक ही है अनेक नहीं यही हम विशेष कहते हैं ॥ सत्य० प्र० पृ० ४०२

३ सब मनुष्यों के लिये धर्म और अधर्म एक ही हैं दो नहीं जो कोई इस में भेद करे तो उस को अज्ञानी और मिथ्यावादी ही समझना चाहिये ॥ ऋ० भा० भूमि० पृ० ११५

अर्थ और अनर्थ का लक्षण

अर्थ वह है कि जो धर्म ही से प्राप्त किया जाय और जो अधर्म से सिद्ध होता है उस को अनर्थ कहते हैं ॥ सत्यार्थ० पृ० ६२६

काम का लक्षण

काम वह है कि जो धर्म और अर्थ से प्राप्त किया जाय ॥ सत्या० प्र० पृष्ठ ६२६

कुकाम का लक्षण

कुकाम वह है कि जो अधर्म और अनर्थ से प्राप्त किया जाय ॥

मोक्ष (मुक्ति) का लक्षण

१ " मुक्ति " अर्थात् सर्वदुःखों से छूटकर बन्धरहित सर्वव्यापक ईश्वर और उस की सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द को भोग के पुनः संसार में आना ॥

सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ६२६

२ मुक्ति अर्थात् जिस से सब बुरे काम और जन्म मरणादि दुःखसागर से छूटकर सुखरूप परमेश्वर को प्राप्त होके सुख ही में रहना है वह मुक्ति कहाती है ॥ आर्योद्देश्यरत्नमाला पृष्ठ ६

मुक्ति के साधन

१ "मुक्ति के साधन" ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्याप्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्यविद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं ॥ सत्यार्थ० पृष्ठ ६२६

२ जो पूर्वोक्त ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना का करना, धर्म का आचरण और पुण्य

का करना, सत्संग विश्वास तीर्थसेवन [देखो तीर्थ का लक्षण] सत्पुरुषों का संग और परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना तथा सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना है ये सब मुक्ति के साधन कहाते हैं ॥ आर्योद्देश्यरत्नमाला पृष्ठ ६

बन्ध का कारण और लक्षण

"बन्ध" सनिमित्तक अर्थात् अविद्या निमित्त से है। जो २ पापकर्म ईश्वर भिन्नोपासना अज्ञानादि सब दुःख फल करने वाले हैं इसीलिये यह "बन्ध" है कि जिस की इच्छा नहीं और भोगना पड़ता है॥

सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ६२६

चरकसंहिता में

"चार फल"

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।
रोगास्तस्यापहर्तारः श्रेयसो जीवितस्य च ॥

सूत्रस्थान प्रथमाध्याय

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन का उत्तम कारण आरोग्यता ही है अर्थात् आरोग्यता रहने पर ही धर्मादि चार प्रकार के पुरुषार्थ की प्राप्ति हो सकती है किन्तु रोग इस आरोग्यता का नाश करने वाले हैं। आरोग्यता न रहने पर जीवन और कल्याण भी नष्ट हो जाता है॥

मनुस्मृति

चार फल

१ वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस्तथा।
सर्वान् संसाधयेदर्थानक्षिण्वन् योगतस्तनुम्॥
२।१००

पदार्थः—[इन्द्रियग्रामम्] इन्द्रियसमूह को [वशेकृत्वा] वशीभूत [तथा, मनः संयम्य] तथा मन को दमन करके [योगतः] युक्ति से [तनुम् अक्षिण्वन्] शरीर को पीड़ा न देता हुआ पुरुष [सर्वान् अर्थान्] सम्पूर्ण अर्थों=पुरुषार्थ-चतुष्टय को सिद्ध करे॥

भाष्यः— बुद्धिमान् पुरुष इन्द्रियों के समूह तथा

मन को स्वाधीन करके शरीर को दुःख न देता हुआ धर्म, अर्थ काम तथा मोक्षरूप मनुष्यजन्म के फलचतुष्टय को सिद्ध करे ॥

२ यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचिः।
तस्य नित्यं क्षरत्येष पयो दधि घृतं मधु ॥ [२।१०७]

पदार्थः— [यः, अब्दम्] जो पुरुष एक वर्ष पर्यन्त [नियतः] नियम में स्थित होकर [विधिना, शुचिः] विधिपूर्वक, पवित्र हो [स्वाध्यायम् अधीते] स्वाध्याय करता है [तस्य, एषः] उस के लिये यह स्वाध्याय [नित्यम्] निरन्तर [पयः, दधि, घृतम्, मधु] दूध, दही, घी, शहद [क्षरति] वर्षाता है ॥

भाष्यः— जो पुरुष एक वर्ष पर्यन्त नियम से पवित्र होकर विधिपूर्वक वेदका स्वाध्याय तथा गायत्री का जप करता है उसको दूध, दही, घी, शहद, ये चार पदार्थ प्राप्त होते हैं अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप मनुष्यजन्म के फल-चतुष्टय प्राप्त होते हैं यहां दूध आदि फलचतुष्टय के उपलक्षण हैं ॥

मनुष्यजन्म की सफलता

प्राण की रक्षा करना मनुष्य का पहिला कर्त्तव्य है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों की प्राप्ति होना मनुष्यजन्म की सफलता है, और यह बात अवश्य ही प्राण पर अवलम्बित है। यदि शरीर की आरोग्यता अच्छी न हो तो इन में से किसी की भी प्राप्ति न होगी। इसीलिये आत्मरक्षण मनुष्य का पहला कर्त्तव्य कर्म है। प्रत्येक मनुष्य को शरीर की आरोग्यता रखने के लिये तद्विषयक ज्ञान प्राप्त करना चाहिये॥

"स्वामी नित्यानन्द जी का व्याख्यान"

जीवात्मा के साथ फलचतुष्टय सम्बन्ध

जीवात्मा के साथ धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षरूप फलचतुष्टय का प्रापक प्राप्यभाव सम्बन्ध है अर्थात् जीवात्मा इन धर्मादि चार फलों का प्राप्त करने वाला और ये धर्मादि प्राप्त होने योग्य मनुष्यजन्म के "चार फल" हैं॥

वेदादि सत्यशास्त्रों के साथ फलचतुष्टय का सम्बन्ध

वेदादि सत्यशास्त्रों के साथ धर्मादि फलचतुष्टय का प्रतिपादक प्रतिपाद्यभाव सन्बन्ध है अर्थात् वेदादि सत्यशास्त्र इन धर्मादि चार पदार्थों का प्रतिपादन करते हैं। इन चार फलों की--प्राप्ति द्वारा मनुष्यमात्र का कल्याण करने के लिये ही परम पिता परमात्मा ने चतुष्पदी=वेदवाणी का दान मनुष्यमात्र के लिये सृष्टि के आरम्भ में किया है। इन धर्मादि की प्राप्ति के लिये ही ऋषि मुनियों ने धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र तथा मोक्षशास्त्रों की रचना की है। इसलिये सब मनुष्यों को इन की प्राप्ति के लिये सदा प्रयत्नशील होना चाहिये॥

यह तृतीय प्रकरण समाप्त हुआ

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

इति

॥ प्रथमो भागः समाप्तः ॥

ॐ

इस पुस्तक को मननपूर्वक
अनेक बार पढ़ना चाहिये ॥

गणपति